पशुधन और मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा:

माइकोटॉक्सिन

(फफूंदी विष) को समझना

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड

माइकोटॉक्सिन क्या हैं?

माइकोटॉक्सिन नम भंडारित चारे (धान का भूसा आदि) और पशुआहार (मूंगफली, मक्का आदि) पर उगने वाली फफूंद द्वारा उत्पन्न होता है।

मुख्य खतरा:

एफ्लाटॉक्सिकोसिस (एस्परजिलस प्रजाति) और डेग्नाला रोग (फ्यूसैरियम प्रजाति)

पशुओं पर प्रभाव:

- दूध उत्पादन में 15% तक की गिरावट
- मृत्यु, प्रजनन संबंधी समस्याएँ, गर्भपात

मनुष्यों पर प्रभाव:

- एफ्लाटॉक्सिन M1 युक्त दूध के सेवन से मानव स्वास्थ्य को जोखिम है

पशुओं में चेतावनी के संकेत:

- बाल गिरना, पूंछ और कान जैसे अंगों का झड़ना
- पैरों पर अवसाद के घाव
- ज्यादा उत्पादक पशु में लक्षण पहले दिखाई दे सकते हैं
- चारा खाने में कमी, कीटोसिस ज्यादा होना
- जेर न गिरना, प्रजनन संबंधी समस्याएं, गर्भपात, वजन घटना

माइकोटॉक्सिन के कारण पैरों में अवसाद के घाव और पूंछ का गल जाना

लक्षण दिखने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें

पशु आहार पर फफूंद का विकास

धान के भूसे पर फफूंद का विकास

साइलेज पर फफूंद का विकास

माइकोटॉक्सिन को कैसे नियंत्रित करें:

रोकथाम

* फफूंदी वाला चारा या गीला चारा कभी न खिलाएँ
* चारे को सूखी, हवादार जगह पर रखें
* ऐसी कृषि पद्धतियाँ अपनाएँ जो फफूंद को कम करें

सुरक्षा:

* पशुआहार मे माइकोटॉक्सिन बाइंडर मिलाएँ (खनिज मिट्टी, सक्रिय कोयला, हर्बल मिश्रण)
* पर्याप्त खनिज मिश्रण और हरा चारा उपलब्ध कराएँ

पारंपरिक सारवार के लिए
QR कोड स्कैन करें

फफूंदीयुक्त चारे से बचें, माइकोटॉक्सिन रोकें

पशुधन की रक्षा करें, सुरक्षित दूध सुनिश्चित करें!!